चित्र लगाएं

कांग्रेस के 1919 के अमृतसर अधिवेशन पर दिया गया स्वामी श्रद्धानन्द जी का ऐतिहासिक भाषण

कांग्रेस के 1919 के अमृतसर अधिवेशन पर दिया गया स्वामी श्रद्धानन्द जी का ऐतिहासिक भाषण

प्रकाशक

हितकारी प्रकाशन समिति

हिण्डौन सिटी (राज.)

प्रकाशक : **हितकारी प्रकाशन समिति**
व्यानिया पाड़ा, द्वारा 'अभ्युदय' भवन,
अग्रसेन कला महाविद्यालय मार्ग, स्टेशन रोड,
हिण्डौन सिटी, (राज.)–322 230
चलभाष : 7014248035, 941434072
Email-aryaprabhakar@yahoo.com

प्राप्ति स्थान : **1. श्री संजय कुमार**
buyvedicsahitya@gmail.com
चलभाष : 7015591564(whattsapp only)
2. श्री गणेशदास–गरिमा गोयल
वैदिक साहित्य प्रतिष्ठान, 4058–59
के सामने, नया बाजार, दिल्ली–110 006
व्यवस्थापक–9329125396
श्री गणेशदास– 9212458841
3. श्री सहदेव समर्पित, सम्पादक
शांतिधर्मी मासिक पत्रिका
753/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द (हरियाणा) – 126102
चलभाष : 9416253826, 9996338552
4. वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : 011–23360150

संस्करण : 2019
मूल्य : 10.00 रुपये

शब्द संयोजन : **आर्य लेजर प्रिंटर्स**, हिण्डौन सिटी (राजस्थान)

मुद्रक : **राधा प्रेस** 38/2/16, साइट 4, साहिबाबाद (उ.प्र.)

इस पुस्तक के प्रकाशन में प्रूफ आदि की सावधानी बरती गई है। इसके पश्चात् भी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो कृपया हमें लिखकर भिजवाएं।

—प्रकाशक

सम्पादकीय (वर्तमान संस्करण)

स्वामी श्रद्धानन्द जी के ऐतिहासिक भाषण के 100 वर्ष

जलियां बाला बाग घटना 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी के दिन अंग्रेज डायर द्वारा निहत्थे भारतीयों के खून से लिखी ऐसी दर्दनाक ऐतिहास की घटना है। जिसके इस वर्ष 100 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। पंजाब सहित देश भर में रोलेट एक्ट रूपी काला कानून देशवासियों को प्रथम विश्वयुद्ध में अंग्रेजों का सहयोग करने के बदले में पुरस्कार रूप में मिला था। इस कानून के तहत किसी को भी केवल शक के आधार पर पकड़कर जेल भेजा जा सकता था। प्रार्थी न कोई अपील कर सकता था न ही वकील। यह सरासर तानाशाही थी। प्रसिद्ध नेता सत्यपाल एवं किचलू की गिरफ्तारी और निर्वासन से अमृतसर में अंग्रेजी राज के प्रति भयंकर आक्रोश था। इसलिए इस कानून के विरोध में अमृतसर में एक जनसभा हो रही थी जिसमें बुड्ढे, बच्चे और महिलाएं भी शामिल थे। इस बाग से बाहर जाने के सभी रास्तों को रोकर डायर ने निर्दोषों पर गोलियां चलवाईं। अनेकों अपनी जान बाने के लिए बाग में स्थित कुंए में कूदने से मर गए। अंग्रेजी सरकार के स्रोत्र एकपक्षीय थे। इसलिए हज़ारों हत्याओं को कुछ सौ में बदल दिया गया था। सरकार उनकी थी। अत्याचार भी उन्हीं के अधिकारी ने किया था। इसलिए सरकारी दस्तावेजों से अधिक प्रामाणिक जानकारी उन लागों ने बताई जो बाग के समीप रहते

थे और अपने घर की छतों से जो अत्यायचार उन्होंने देखा था। डायर के कुकर्मों की समीक्षा के लिए हंटर आयोग बैठाया गया तो बड़ी बेशर्मी से डायर ने अपने कदम को उचित ठहराया था। डायर पर कोई कार्यवाही न की जा सकी। मगर उसे नौकरी से छुट्टी दे दी गई। अंग्रेजों की पक्षपाती सोच देखिये कि डायर के पक्ष में इंग्लैंड में धन संग्रह तक किया गया था। जबकि भारतीयों पर हुए अत्याचार के पक्ष में कोई मजबूती से भी न बोला था। एक अन्य घटना की ओर मैं ध्यान दिलाना चाहता हूं। इस घटना से कुछ दिन पहले आक्रोशित भीड़ ने अमृतसर के कूचा कोड़ियां में मर्शिला शेरवुड जोकि अमृतसर सिटी मिशन स्कूल की मैनेजर थी को साइकिल पर घर लौटते हुए घेर लिया था। उनके साथ दुर्व्यवहार हुआ पर उनके प्राण भी कुछ स्थानीय निवासियों ने बचाये। डायर को जब इस घटना का पता चला तो उसने अपनी क्रूरता का परिचय देते हुए इस कूंचे वाले सभी लोगों पर आदेश जारी किया कि इस गली से निकलने वाले सभी लोग नाक व घुटनों के बल रेंगकर निकलेंगे। यदि रेंगने वाला जरा भी घुटना ऊपर उठाता तो उसकी पीठ पर बंदू के बट से वार किया जाता। गली के मध्य में लगाई टिकटिकी से बांधकर निर्वसत्र पीटा जाता। इसके चलते अनेक लोगों को यह सजा झेलनी पड़े। इनमें एक गर्भवती स्त्री, एक अंधा व वृद्ध व्यक्ति भी शामिल था। इस गली के निवासियों का इस घटना से कोई सम्बन्ध नहीं था फिर भी भारतीयों पर ऐसा अत्याचार किया गया। कुल मिलाकर डायर के अत्याचार से सम्पूर्ण पंजाब में डर और भय का माहौल था।

ऐसे वातावरण में देश के राष्ट्रीय नेताओं ने पंजाब की जनता के मनोबल को उठाने का निर्णय लिया। मोतीलाल नेहरू के परामर्श पर स्वामी श्रद्धानन्द जी जून माह में पंजाब के दौरे पर गए। उन्होंने अपनी कर्मभूमि की बिगड़ी दशा देखी तो परामर्श कर कांग्रेस का राष्ट्रीय अधिवेशन दिसम्बर में अमृतसर में करवाए जाने का निर्णय लिया। कांग्रेसी नेताओं के अनुरोध पर स्वामी जी ने कांग्रेस के अधिवेशन की स्वागतकारिणी सभा के सभापति का दायित्व स्वीकार किया। सभापति के रूप में स्वामी

जी का भाषण पवित्र वेदवाणी के मंत्र से आरम्भ हुआ। उनके भाषण में घायल पंजाब की दशा और उसकी प्रजा के बलिदान का मार्मिक वर्णन था। उसके साथ में कांग्रेस के नरम और गरम दल को एक होकर राष्ट्रहित में कार्य करने की प्रेरणा थी। दिल्ली में चांदनी चौक उनके द्वारा गोरखे सिपाहियों को रोके जाने की आहट थी। दिल्ली में हुई हत्याओं एवं हिन्दू–मुस्लिम एकता के परिदृश्य की प्रतिकृति थी। जामा मस्जिद से दिये गए उनके भाषण की आभा थी। भारत के अछूत 6.5 अछूतों को जातिभेद मिटाकर गले लगाने की अपील थी और सबसे बढ़कर मार्शल लॉ का विरोध करने वाले भारतीयों को सदाचारी और चरित्रवान बनने का उपदेश था। स्वामी जी के भाषण में उनके राष्ट्रीय हित की भावना का अवलोकन होता है। यह ऐतिहासिक भाषण हमें उनके व्यक्तित्व और चिंतन के दर्शन करवाता है।

इस ऐतिहासिक भाषण के 100 वर्ष पूर्ण होने पर इसके पुनः प्रकाशन का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ। इसके लिए हम ईश्वर के आभारी हैं। इस भाषण की मूल प्रति दिल्ली के गांधी संग्रहालय में उपलब्ध है। इसका प्रकाशन स्वर्गीय डॉक्टर भवानीलाल भारतीय जी द्वारा गोविंदराम हासानन्द द्वारा प्रकाशित स्वामी श्रद्धानन्द ग्रंथावली भाग 11 में परिशिष्ट 3 के रूप में पृष्ठ संख्या 152 से 166 पर प्रकाशित किया गया था। हम भारतीय जी के पुरुषार्थ के आभारी है। पाठक इस भाषण को पढ़कर उससे लाभार्थ लेकर देश और जाति की रक्षा का प्रण अवश्य लेंगे। यह हमारा पूर्ण विश्वास है।

–डॉ. विवेक आर्य,
drvivekarya@yahoo.com
Join us at facebook.com/arya.samaj
(आर्य समाज के सबसे बड़ी संख्या वाले फेसबुक पेज से जुड़िये)

कांग्रेस के 1919 के अमृतसर अधिवेशन पर दिया गया स्वामी श्रद्धानन्द जी का ऐतिहासिक भाषण

'जलियांवाला बाग' के नृशंस हत्या–काण्ड के उपरान्त ''भारतीय राष्ट्रीय महासभा' का जो अधिवेशन हुआ था उसके 'स्वागताध्यक्ष' का दायित्व महात्मा गांधी के अनुरोध पर स्वामी जी ने स्वीकार किया था। उस अवसर पर स्वामी जी ने जो महावपूर्ण भाषण दिया था उसकी अविकल प्रति हमें हिन्दी के ख्याति प्राप्त साहित्यकार आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' जी के सौजन्य से प्राप्त हुई है।

यहां पर स्वागत–भाषण को इस दृष्टि से प्रस्तुत किया जा रहा है कि स्वामी जी ने कांग्रेस के मंच से वेदमन्त्रों के उच्चारण के साथ देश के स्वातन्त्र्य एवं ऐक्य के लिए जिस क्रांतिकारी विचारों को प्रकटीकरण किया था उनके, एवं उनके तेजस्वी व्यक्तित्व और जोजस्वी मनीषा से पाठक परिचय प्राप्त कर सकें। ऐसे उदात्त और प्रेरक भाव स्वामी जी–जैसा महानुभाव ही प्रकट कर सकता था। यहां यह बात विशेष रूप से ध्यातव्य है कि इस अधिवेशन में जहां मनोनीत अध्यक्ष श्री मोतीलाल नेहरू अपने पूरे परिवार के साथ–साथ सम्मिलित हुए थे वहां महात्मा गांधी के अतिरिक्त लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, देश बन्धु चित्तरंजन दास, विपिन चन्द्र पाल, प्रभृति अनेक चोटी के नेता देश के

विभिन्न भू–भागों से पधारे थे। इस प्रकार नरम और गरम दलों की इन विभूतियों में वैचारिक सामंजस्य बिठाने का कार्य श्रीमती एनी बेसेण्ट तथा पण्डित मदनमोहन मालवीय जी के साथ स्वयं स्वामी जी भी कर रहे थे। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में यदि पाठक स्वामी जी के भाषण को पढ़ेंगे तो उन्हें विशेष प्रेरणा मिलेगी।

—भवानीलाल भारतीय
सम्पादक

भारतीय राष्ट्र समाज के 34वें अधिवेशन (अमृतसर) की स्वागतकारिणी सभा के सभापति का आरम्भिक भाषण

(दिनांक : 26 दिसम्बर, 19191 तिथि 11 पौष, 1976)

ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
आधाते सुम्नमीमहे।।

हे, सारी सृष्टि के आधार! तुम्हीं हमारे रक्षक पिता हो—तुम्ही हमें मान दिलाने वाली माता हो। इसलिए हम सब तुम्हें इस पवित्र यज्ञ में आह्वान करते हैं। हे शासकों के परम शासक और जातियों के परम सहायक! तुम आज इस जातीय भवन में अपने दृढ़ न्याय और असीम प्रेम का प्रसार करो जिससे प्रभावित होकर सब बहिनें और भाई, चेतन और अचेतन—दोनों प्रकार के जगत् के डर से मुक्त होकर, न्याय और प्रेम की आहुतियों से इस जातीय यज्ञ को पूर्ण करें।

भारत माता की पुत्रियों और पुत्रो!

स्वागतकारिणी सभा अमृतसर की ओर से मैं आप सबका हार्दिक स्वागत करता हूं। जिन्होंने दिल्ली नगर में पहुंचकर इस जातीय महासभा के रत्नों का निमन्त्रित किया था, जिन्होंने आप

सबके स्वागत के लिए देहली से लौटते ही अमली काम शुरू कर दिया था, जो मातृ–भक्ति के प्रेम–मद से उन्मत्त होकर दिनरात जातीय सेवा की मस्ती में झूमते फिरते थे, जिन्होंने गंगा और यमुना के संगम की बुनियाद गत रामनवमी के दिन रखकर सिक्ख गुरुओं से पवित्र किए हुए इस नगर को सचमुच अमृत–सरोवर बना दिया था–उनको भयभीत स्वार्थ तथा अन्याय की शक्तियों ने गत 10 अप्रैल को गुम कर दिया। अपने नेताओं का बिछोड़ा एक ओर, और जिस देवता की पूजा के लिए सत्याग्रह का मानसिक व्रत धारण किया था, उसकी गिरिफतारी दूसरी ओर–इन दोनों घटनाओं ने अमृतसर की व्याकुल जनता को अन्धा कर दिया। प्रजा अपनी पैत्रिक प्रथा के अनुसार सिर और पैर से नंगी, अपने मां–बाप हाकिम के पास , फरियाद को दौड़ी। परन्तु हाकिम को उसके अन्दर का भय कंपा रहा था। वह मानता है कि उसने पहले से ही फौज इकट्ठी कर रखी थी और उसको हुकुम दे दिया था कि यदि भूलकर, उसे मां–बाप समझने वाली, प्रजा उसके मन्दिर की ओर चलने का यत्न करे तो, जैसे भी हो सके, उसे आगे बढ़ने से रोका जाए। भोली निहत्थी प्रजा ने रूठे हुए बालक की तरह मारपीट कर आगे बढ़ने का यत्न किया और प्रजा के पति सम्राट जार्ज पंचम के प्रतिनिधियों ने उसकी प्रजा को गोलियों से भून डाला। अपने निरपराधी सम्बन्धियों को घायल होते हुए और उनमें से बहुतों को रंगभूमि में बे–जान पड़े हुए देखकर, जनता में आसुरी भाव का विकास हुआ। जिस लाडले मान के भाव से प्रेरित होकर चले थे, उसका उल्टा परिणाम देखकर भी जिन वीरों के हृदय नहीं डोले और जो फिर भी एक ओर मृत शरीरों और घायलों को उठाते हुए, दूसरी ओर जनता को शान्ति से काम लेने की प्रेरणा करते रहे, उन पर अब

तक सत्यपरायण देवताओं के मानसिक भावों की पुष्प–वर्षा हो रही है। परन्तु साधारण पुरुष क्रोधाग्नि में दग्ध होकर बुद्धिहीन हो गए। उस तामसी अवस्था में जो पिशाचत्व के काम कुछ भारत के कुपुत्रों से हुए वह जाति के उज्ज्वल मुख पर एक बदनुमा धब्बा है और उसी के लिए सारे पंजाब को प्रायश्चित्त करना पड़ा है। यदि गंगा और यमुना के संगम के साथ सरस्वती भी उनमें आ मिलती तो पूर्ण पवित्र प्रयाग बन जाता, और हिन्दू, मुसलमान और ईसाई जन–समाजों के मेल से भारत से दुई दूर होकर ब्रिटिश साम्राज्य की जड़े पाताल में पहुंच, संसार में सचमुच एक चक्रवर्ती राज्य की बुनियाद डाल देतीं। परन्तु जहां स्वार्थ का चारों ओर राज्य है, वहां इस गिरे हुए समय में निःस्वार्थ क्षमता का प्रकाश कैसे होता! नियम के नाम पर विप्लव और शान्ति के नाम पर अत्याचार का राज्य फैल गया। मार्शल–लॉ ने –नर, नारी, बाल, वृद्ध और युवा सबको बेजान कर दिया। वैशाख की पवित्र संक्रांति के दिन मार्शल–लॉ का विजय हुआ और शान्ति फैल गई, परन्तु वह शमशान–भूमि और कब्रिस्तान की शान्ति थी–वह मौत की शान्ति थी।

इस शान्ति का निष्कण्टक राज उस समय तक बराबर रहा जब 29 जून सन् 1919 की दोपहर के समय मैंने, भारत के दो प्रसिद्ध नेताओं और पंजाब के अपनाए हुए संरक्षकों के साथ, अमृत नाम्नी–परन्तु विष से मूर्छित–नगरी में प्रवेश किया। मेरा मतलब पूज्य मालवीय जी तथा माननीय पं. मोतीलाल नेहरू जी से है।

जिस दिन से इन दोनों वीरों ने जलियांवाला बाग नामी पवित्र तीर्थ की प्रदक्षिणा करके धैर्य और निर्भयता का अमर मन्त्र फूंकना शुरू किया, उसी दिन से अमृतसर में जीवन का संचार हो चला और इस जागृति का पहला परिणाम यह हुआ कि मूर्छा से

जागते ही जनता ने अपने नेताओं की प्रतिज्ञा को याद करके कहना आरम्भ किया कि कांग्रेस का आगामी अधिवेशन अमृतसर में ही होना चाहिए। किस प्रकार यह शब्द सारे शहर में गूंज उठा, किस प्रकार इस आवाज की गूंज को दबाने की कोशिश हुई, किस प्रकार 'दिन–दिन चढ़े सवाया गूढ़ा रंग' की उक्ति के अनुसार जनता की दृढ़ता को कामयाबी हुई, इस पर कुछ भी कहने की जरूरत नहीं। 'जिन ढूंढा तिन पाइयां' अमृतसर की जनता की मुराद आज पूरी हुई और मुझे भारत की पूज्या देवियों और माताओं पर न्योछावर होने वाले पुत्रों का स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इस जातीय महासभा के इतिहास में शायद यह पहला ही अवसर है जब एक संन्यासी इसकी शानदार वेदी पर खड़ा दिखाई देता है। जिस दिन से मैं स्वागतकारिणाी सभा का सभापति चुना गया, उसी दिन से यह प्रश्न हो रहा है–'क्या संन्यासी को राजनैतिक आन्दोलन में भाग लेना चाहिए?' मेरा उत्तर बहुत सीधा है। जिस दिन से मैंने पवित्र संन्यासाश्रम में प्रवेश किया उसी दिन से सारे संसार को एक परिवार समझने, सारे संसार के धन को एक आंख से देखने और लोक–लज्जा को छोड़कर लोक–सेवा में दत्तचित्त होने का व्रत धारण कर लिया। मैं राजनैतिक आन्दोंलन के लिए नहीं प्रत्युत किसी और कर्त्तव्य के पालन के लिए आज इस वेदी पर खड़ा हूं। पहला कारण मेरे इस वेदी पर आने का यह है कि पंजाब के जिन रत्नों ने भारतमाता के उज्जवल माथे को दाग से बचाने के लिए फांसी और जन्मकैद को तुच्छ समझा और निरपराध होते हुए रहम की दर्खस्त को पाप समझकर कैदखाने को काशी और काबे का रुतवा दिलाया–हरकिशन लाल, दुनीचन्द, रामभज दत्त, किचलू, सत्यपाल–उन्होंने अपनी

भरी सभा से मुझे आज्ञा भेजी कि मैं स्वागतकारिणी का सभापति बनूं। फिर मैंने जेल के खूनी पिंजरों में श्रद्धा–सम्पन्न चौधरी बुग्गा और वीर महाशय रत्तो से सिंह पुरुषों के मुख से भी यही ध्वनि सुनी। परन्तु जब इनमें से कुछ धर्मवीरों की धर्मपत्नियों ने कहा–'बन्दीगृह में घिरे हुए हमारे पति महाशयों के आत्मा तभी शान्त होंगे जब कांग्रेस का महोत्सव न टले' और भिक्षु संन्यासी से उल्टी भिक्षा मांगी तो उसे मातृ–शक्ति के आगे सिर झुकाना पड़ा।

यह पहला कारण मेरे इस वेदी पर आने का है। दूसरा कारण मेरा आश्रम और उसका कर्तव्य है। सनातन वैदिक धर्म की रक्षा के लिए जो सम्प्रदाय (सनातन धर्म समाज, आर्य समाज और सभा–समाजें) भारत वर्ष में स्थापित हैं, उनका प्रश्न है कि संन्यासी का राजनीति से क्या सम्बन्ध? मेरा उत्तर –वेद मुझे आज्ञा देता है कि सौ बरसों की उम्र तक जीने की आशा कर्म करते हुए ही करूं, परन्तु शर्त यह है कि उन कर्मों में फंसूं नहीं।

कवि तुलसीदास ने सच कहा है –'करम प्रधान विश्व करि राखा'–प्रत्येक को अपना धर्म पालन करना है। आज तक यह 'भारत जातीय महासभा' साधारण पोलिटिकल काम करती रही है, परन्तु आज इसे धर्म के शिखर पर उठना पड़ेगा, और उसके साथ ही–हे, बहिनों और भाइयो! हम सबको भी अपनी दृष्टि ऊंची करनी पड़ेगी। पंजाब का तप सहस्र मुख से यही उपदेश दे रहा है कि मानवी मूल अधिकारों की प्राप्ति के लिए बड़े गम्भीर तप की आवश्यकता है।

अब नीतियों औ राजीनामों और सौदा–सुलुफ का जमाना नहीं रहा; अब निर्भयता से सत्य पर दृढ़ होने का समय आ गया है। संन्यासी की सम्प्रदायों से चाहे वे धार्मिक हों या राजनैतिक–क्या

काम? उसने तो सारे संसार की सेवा का बीड़ा उठाया है—उसका किसी सम्प्रदाय के साथ क्या सम्बन्ध! शायद इसी विचार से प्रेरित होकर मेरे हस्बेहाल फारसी कवि ने कहा है—

'न हिन्दू अम् न मुसलमान न गब्रियम न यहूद'

मैं न 'हिन्दू' हूं न 'मुसलमां', न 'ईसाई' हूं और न 'यहूदी'। मैं न 'माम्डरेट' हूं, न 'एक्स्ट्रीमिस्ट', न 'होमरूलर' हूं और न किसी विशेष पक्ष का समर्थक हूं। लेकिन, शायर के दूसरे मिसरे के साथ मैं सहमत नहीं। मैं नहीं कहता कि—

'बहैरतम् कि सरंजामे माचिखाहद बूद'

मैं विस्मित नही हूं मेरा अन्त क्या होगा। मेरा आनन्द श्रद्धा में है और इसलिए मैं जानता हूं कि भारत माता की सन्तान के साथ मेरा भविष्य भी उत्तम ही होगा।

एक राजनैतिक बुद्धिमान ने मुझे सम्मति दी है कि मैं रिलीजस और सोशल कामों में लगा रहूं और पोलिटिकल कामों में दखल न दूं। उनके लिए मेरा उत्तर यह है कि जिस समय पंजाब की भूमि में आते हुए 'परिन्दों के भी पर जलते' थे, उस समय संन्यासी ने अपना कर्त्तव्य समझा कि यहां की मुरझाई हुई व वाटिका को प्रेम—जल से सींचने के काम में आपके राजनैतिक नेताओं के कन्धे से कन्धा जोड़ दें। परन्तु आज जब देश के रत्नों ने अपना कर्त्तव्य संभाल लिया है और 34 वर्षों से देश—सेवा में रत कर्मवीरों ने एक स्वर से पंजाब को अपना लिया है, तब मैं जाति के अमीनों को उनकी अमानत सौंपकर अपने—आपको कृतकृत्य समझता हूं।

बहिनो और भइयो! मैं पंजाब की ओर से साधारणतया और अमृतसर की प्रजा की ओर से विशेषतः आप सबका स्वागत करता हूं। मैं जानता हूं और भली प्रकार अनुभव करता हूं कि आपकी

सेवा हम यथार्थ रूप से नहीं कर सकते। इस नगर को धनहीन, सम्पत्तिहीन, बलहीन और उत्साहहीन बनाने में मार्शल—लॉ ने कुछ कसर नहीं छोड़ी। परन्तु एक भाव है जिसे मार्शल—लॉ का भयानक अत्याचार भी दबा नहीं सका। वह है मातृभूमि का प्रेम और माता की सन्तान के साथ सच्चा अनुराग और वही भाव मैं आपको भेंट धरता हूं। इस भाव में ऐसी वृद्धि हुई है कि यदि हम उसके लिए मार्शल—लॉ के संचालक श्रीमान् सर माइकल ओडवायर औ र उनके हाथ के दोनों हथियारों—अर्थात् जनरल डायर और कर्नल फ्रेंक जॉनसन का हार्दिक धन्यवाद करें तो अनुचित नहीं है और शायद कुछ व्यक्तियों ने इसी भाव को लक्ष्य में रखकर कर्नल फ्रेंक जॉनसन के सामने 'मार्शल—लॉ की जय' गुंजाई हो। निष्कपट कर्नल फ्रेंक और मातृ—प्रेम के रंग में प्रजा को रंग देने वाले जनरल डायर ने जो मार्शल—लॉ की घुट्टियां पंजाब को पिलाई हैं उनसे पंजाब का जातीय जीवन 50 वर्षों के लिए मर तो क्या जाता, उल्टा आधी शताब्दी का उल्लंघन करके आज पंजाब अपने आगे बढ़े हुए, बंगाली, मराठी, गुजराती, मद्रासी भाइयों के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ाने की तैयार है। जिस पंजाब प्रान्त में राष्ट्रीयता और उसके अधिकारों की चर्चा पढ़े—लिखों में से भी केवल मुट्ठीभर आदमियों में रह गयी थी वहां आज गुमनाम—से—गुमनाम ग्राम में भी जातीय महासभा के उद्देश्य और उसकी शक्ति को केवल पुरुष ही नहीं, स्त्रियां भी कुछ—कुछ समझने लग गई हैं। गत् 15 दिनों के अन्दर मेरे पास ग्रामों से जो पत्र आए हैं और 24 जून 1919 ई. से अब तक जिन ग्रामीण बहिनों और भाइयों से मेरी भेंट हुई है उनकी काया—पलट देखकर मुझे विश्वास हो गया कि जाति में अब पूरी जागृति हो गई है।

इस समय जाति रूपी वीणा की सम्प्रदाय रूपी विविध तारें

एक–दूसरी से मिली हुई हैं और उनमें से एक ही स्वर निकल रहा है। इन स्वरों की एकता की बधाई में क्या पोलिटिकल पार्टीबाजी के बेसुरे आलाप को न्यौछावर नहीं कर देना चाहिए? मॉडरेट, लिबरल्ज़, और एक्स्ट्रीमिस्ट रेडिकल्ज़, महाराष्ट्र होमरूलर्ज़ और अडियार होमरूलर्ज़ तथा इनकी शाखाएं–प्रतिशाखाएं, एक ही लक्ष्य को सामने रखकर काम करने की दावेदार हैं। उनका एकमात्र उद्देश्य मातृभूमि को स्वतन्त्र कराना और संसार के अन्तर्जातीय संगठन में उसे माननीय बनाना बतलाया जाता है। तब एक–दूसरे से इतनी घृणा क्यों? अपनी कमजोरी मनुष्य स्वयं नहीं देख सकता और जब दो पक्ष–प्रत्यक्ष में स्थापित होकर विवाद आरम्भ हो जाय तब तो विचारों का पक्षपात स्वाभाविक है, परन्तु तीसरा निष्पक्ष दर्शक दोनों की कमजोरी को ठीक बतला सकता है। सच्चाई के प्रकट करने में क्षमा–प्रार्थना की आवश्यकता नहीं और इसलिए मैं अपनी सम्मति स्पष्ट कह देता हूं।

इस समय के मतभेद का कारण भारत–सचिव मिस्टर माण्टेगू की पेश की हुई सुधार–स्कीम समझी जाती है। नरम दल के महानुभाव कहते थे कि इसे स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाओ तो हम तुम सबके साथ शामिल होंगे। तब प्रश्न होता कि क्या आप इतने ही संशोधन से सन्तुष्ट हैं ? उत्तर मिलता था कि नहीं, परन्तु जितना मिले उसे स्वीकार करके और लेने के लिए हाथ फैलाना और बात है और मिले हुए को सर्वथा अस्वीकार करना और बात है। नरमदल की दृष्टि से यह उत्तर ठीक था, परन्तु अब गरमदल भी तो यही कहने लग गया है। अब तिलक महाराज भी तो यही कहते हैं कि जितना मिलता है उसे ग्रहण करो और शेष के लिए आन्दोलन जारी रखो। फिर मतभेद क्यों ? उत्तर दोनों ओर से एक–साही मिलता है। नरम कहते हैं–'हम

अपनी सम्मति से नहीं डिगे, गरमों ने अपनी सम्मति बदल ली है–वे हमारे समीप पहुंच गए हैं और इसलिए हमारी जीत स्वीकार करो।' गरम कहते हैं–नरम तो बिना ननुनच के सब–कुछ स्वीकार करने को तैयार थे, अब वे हमारी ओर उठे हैं, इसलिए उन्हें हार स्वीकार करनी चहिए।' एक–दूसरे की दलीलें समाचार पत्रों में निकल चुकी हैं, उनको दोहराने की यहां आवश्यकता नहीं। बात सीधी यह है कि दोनों में से कोई भी हार मानने को तैयार नहीं है। बात सीधी यह है कि दोनों में से कोई भी हार मानने को तैयार नहीं है। दोनों ही अपने स्थान में डटे खड़े हैं। नरम कहते हैं कि भारत सचिव हमारी बुद्धिमत्ता पर मोहित हुए और हमारी माकूल महदूद तजवीजों से सहमत होकर उन्होंने भारतवर्ष को कुछ अच्छे अधिकार दिए हैं। इसके उत्तर में गरम कह सकते हैं कि यदि हम पूरे स्वराज की एकदम याचना न करते तो देश को इतना भी न मिलता जो अब मिला है। वे पंजाबी की प्रसिद्ध लोकोक्ति पेश कर सकते हैं कि 'मौत को पकड़ो तो जहम कबूल करता है।' परन्तु मिस्टर माण्टेगू एक तीसरी बात कह रहे हैं। 'हाउस आव कॉमन्स' में सुधार– स्कीम पर वक्तृता करने हुए उन्होंने 4 दिसम्बर को मिस्टर स्पूर के उत्तर में कहा कि न तो कॉमन्स भारत की शासन–पद्धति को हिन्दोस्तानी आन्दोलन के कारण बदल रहे हैं और ना ही वह विश्वास करते हैं कि यह आन्दोलन आगे जारी रहेगा। उन्होंने यह भी कहा अर्थात् 'आन्दोलन से शक्ति के परिवर्तन में शीघ्रता न होगी प्रत्युत देरी हो सकती है।'

तीन दल हैं और तीनों की बात एक–दूसरे को काटती है। परन्तु अपने–अपने ख्याल में तीनों सच्चे हैं। नरम यदि सचिव माण्टेगू के प्रस्ताव का समर्थन करते तो उनके पास सुधार–स्कीम

के विरोधियों के आक्षेपों का उत्तर देना कठिन हो जाता। परन्तु क्या यह सच नहीं कि इन सुधार–स्कीम को एकदम से पास कराने के लिए 'कांग्रेस की एक शिकायत आज के अधिवेशन से पहले दूर करना' ही मिस्टर बानरला ने बतलाया था। मिस्टर माण्टेगू भी सच्चे हैं क्योंकि उन्होंने जो कुछ ब्रिटिश पार्लियामेंट से भारत को दिलवाया है वह उन्हीं के दृढ़ संकल्प का नतीजा है–भारत की नरम और गरम पार्टी तो उनकी शतरंजी चालों के मोहरे मात्र थे।

जब यह हाल है तो लड़ाई काहे की? पुराने पठानों की तरह दोनों मूंछों पर ताव दे रहे हैं और मातृभूमि के विरोधी उनकी खिल्ली उड़ा रहे हैं। यह घरू युद्ध कैसे दूर हो ? सुधार–स्कीम अब विवादास्पद विषय नहीं रहा। नरमों का उसे स्वीकार करना और गरमों का उसे अस्वीकार करना–दोनों निरर्थक डींगे है। बुरी हैं वा भली, पूर्ण है वा अपूर्ण–सुधार–स्कीम हम पर लागू हो चुकी हैं। नरमों से तो इस पर कोई प्रश्न नहीं हो सकता, परन्तु मैं गरमों से पूछता हूं कि आपके अस्वीकार करने के अर्थ क्या हैं ? क्या आप इस पास हुए कानून का सर्वथा बहिष्कार करने को तैयार हो? क्या आप यत्न न करोगे कि लेजिस्लेटिव काउंसिलों में आपके चुने हुए, आपका पक्ष समर्थन करने वाले प्रतिनिधि बैठें ? यदि सारी जाति, एकसम्मत होकर, इन मिले हुए अधिकारों की उपेक्षा करने को तैयार होती, तब तो अस्वीकार करने के कुछ अर्थ भी हो सकते। परन्तु इस समय तो यह असम्भव है। तब झगड़ा कैसे तै हो? झगड़ा तै हो गया है क्योंकि लोकमान्य तिलक महाराज ने व्यवस्था दे दी है कि 'जो मिला है उसे ले लो और शेष के लिए व्यवस्थित आन्दोलन जारी रखो।'

भारत में राष्ट्रीयता के भाव के आदि संचारकों में से तिलक

महाराज का ऊंचा दर्जा है। और कौन भारत का सपूत है जिसने बहादुर तिलक से बढ़कर माता की शान की रक्षा के लिए सहन किया है? क्या 'मातृ–सेवक–सेना' के सैनिक अपने बूढ़े सेनापति की व्यवस्था के आगे सिर न झुकाएंगे?

अब रास्ता साफ हो गया। नरम और गरम दोनों मिले अधिकारों को लेने में सहमत हैं। मतभेद इतना ही है कि इतना भी किसकी कृपा से मिला? मैं उस बहुपक्ष की सेवा में, जिसके हाथों में इस समय कांग्रेस की बागडोर है, एक निवेदन करता हूं। आपकी शक्ति बड़ी है। बुद्धि और नीति का चाहे आपके कुछेक मॉडरेट लिबरल भाईयों ने ठेका ले रखा हो, लेकिन संस्था और बल में आपका पाया इस समय ऊंचा हैं सामने शत्रु नहीं है, एक ही माता के पुत्र आपके भाई हैं। उनमें से कुछ ऐसे पुराने योद्धा भी हैं जिन्होंने माता की सेवा में बहुत–कुछ सहन किया है। क्या स्वर्गवासी गोखले–मातृसेवा में मुग्ध उसी चिन्ता में प्राण देने वाले गोखले–को आप भुला सकते हो ? और उस राजनैतिक संन्यासी के त्यागी उत्तराधिकारी साधु–स्वभाव श्रीनिवास शास्त्री की तुम उपेक्षा कर सकते हो? आज समय के फेर ने चाहे कुछ पलटा दे दिया हो, परन्तु क्या राजनैतिक आन्दोलन के प्रथम वीर सिपाही श्री सुरेन्द्रनाथ बंदोपाध्याय का तुम तिरस्कार करोगे ?

झगड़ा एक पल में निबटता है, यदि एक संन्यासी का कहना मान लो। तुम ही मूंछ नीची कर लो और जो कुछ मिला है उसके संभालने में लग जाओ।

इस सम्बन्ध में आपका एक कर्त्तव्य है जिसे मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। यह सच है कि हमारी जाति को उसके अधिकारों से ब्रिटिश शासकों ने मुद्दत् तक वंचित रखा, यह सच है कि इस देश के साथ कई बार विश्वासघात हुआ, यह सच है

कि इस समय भी ब्रिटिश जाति के अन्दर ऐसे लोग हैं जिन्होंने आपके पोलिटिकल अधिकारों को दबाने का ही नहीं बल्कि हमारे बचे–खुचे मानवी अधिकारों तक को छीनने का यत्न किया है, परन्तु क्या कुपात्रों की खुदगर्जी और बे–इन्साफी को देखकर सुपात्रों के धर्मभाव और न्याय को भूल जाना चाहिए? मिस्टर माण्टेगू ने इस समय वह काम किया है जो संसार के इतिहास में सदा के लिए यादगार रहेगा। कहा जा रहा है कि 'मि. माण्टेगू ने क्या किया है अपने साम्राज्य की भलाई के खयाल से किया है। अब उनका धन्यवाद करने की क्या जरूरत है?' मैं पूछता हूं कि संसार में कितने व्यक्ति हैं जो अपना कर्त्तव्य पालन करते हैं? क्या यह सच नहीं है कि आपमें से जितने पोलिटिकल अधिकार पाने के लिए अधिक शोर मचाते हैं, वे भारत के साढ़े छः करोड़ अन्याय से पीड़ित अपने भाइयों को अछूत सकझकर उनसे घृणा का भाव दूर नहीं कर रहे ? और कितने हैं जो अपने उन दीन भाइयों को अपनाते हैं? यदि अपनी जाति के एक अन्त्यज को अपनाने के लिए आप 'मोहनदास कर्मचन्द गांधी' को देवता मान सकते हों तो घोर विरोधों का मुकाबिला करते हुए एक रसातल को गई हुई जाति को, किसी अंश तक, उसके अधिकार दिखाने में कृतकार्यता प्राप्त करने के उपलक्ष्य में क्या आप मिस्टर माण्टेगू का वाणी से भी धन्यवाद न करेंगे? और जिस ब्रिटिश पार्लियामेंण्ट ने अपने कर्त्तव्य को (चाहे वह किसी स्वार्थ के विचार से क्यों न हों) समझा है, क्या हम उसे साधुवाद न कहेंगे? बहिनों और भाइयों! भारत की प्राचीन सभ्यता के नाम पर मैं आप सबसे अपील करता हूं कि इस अपूर्व अवसर को हाथ से न जाने देना और कृतध्नता का दाग माथे पर न आने देना!

परन्तु इस कृतज्ञता प्रकाश करने का यह मतलब नहीं है

कि आप अपने शेष अधिकारों के लिए आन्दोलन करना छोड़ दो। मिस्टर माण्टेगू के कृतज्ञ होते हुए भी इस अंश में उनसे मतभेद आवश्यक है। परन्तु एक बात मैं अवश्य कहूंगा कि कहीं आन्दोलन में फंसकर मिले हुए अधिकारों का ही नाश न हो जाय। एक शायर का कलाम बिल्कुल हस्बे–हाल है–

धोने की रिफार्मर है जा बाकी, कपड़े पै है जब तलक कि धब्बा बाकी।
धा शौक से धब्बे को पै इतना न रगड़, धब्बा रहे कपड़े पै न कपड़ा बाकी।

अब मैं उस घटना की ओर जाता हूं जो आपको स्वदेश के दूर– से–दूर होने से खींच कर लाई। देश जिस परीक्षा में से गुजरा है उसे यहां दोहराने की आवश्यकता नहीं। जिस घटना ने पंचनद की पुरानी पाक सरजमीन से चंगेज खां और नादिरशाह के अत्याचारों को विस्मरण करा दिया उसकी बुनियाद भारत की असली और बनावटी–दोनों प्रकार की राजधानी देहली नगर में रखी गई थी। 30 मार्च सन् 1919 ई. के तीसरे पहर पहिली गोली देहली में चली और उस समय पता लगा कि जिस देश को बेजान समझा जाता है उसमें कितनी जान है। हण्टर–कमेटी के आगे जा शहादत गुजरी है वह क्या जाहिर करती है ? उससे मालूम होता है कि इस सदियों से सोई हुई जाति के अन्दर सच्ची वीरता का भाव भी सोया हुआ ही था, मर नहीं गया था। भारतवर्ष के पुररुद्धार के लिए पहला रक्त पाण्डवों की पुरानी राजधानी की भूमि पर गिरा और उस रक्त ने भारतमाता के प्रधान पुत्रों (अर्थात् हिन्दुओं और मुसलमानों) के सदियां से जुदा हुए दिलों को जोड़ दिया। 31 मार्च को पहला जनाजा पचास हजार मातमदारों के साथ कब्रिस्मान की तरफ चला और वहां शहीद की लाश पर मुस्लिम ईमान, हिन्दू–मुस्लिम एकता के शैदा, इस समय के

मेरे सबसे प्यारे भाई, हकीम अजमलखां से मेरी भेंट हुई। मुसलमान शहीद का जनाजा और हिन्दू बराबर कन्धा दे रहे थे। यह भी एक विचित्र दृश्य था। शहीद की कब्र पर उसके खून के पैबन्द से, बरसों के बिछुड़े हुए दिल एक–दूसरे से जुड़ गए।

फिर जब शाम को दो जनाजे कब्रिस्तान की ओर चलते करके मैं तीन अर्थियों के साथ शमशान–भूमि में पहुंचा और दाह–कर्म के पीछे परमेश्वर के दरबार में शान्ति के लिए प्रार्थना की और हिन्दू–मुसलमानों को इस ईश्वरदत्त एकता को स्थिर रखने के लिए अपील की तो एक सिक्ख भाई ने कहा–'हम पर क्यों जुल्म करते हो? सिक्ख भी कौम के साथ है।' अब हजारों के मजमें में उस वक्त सैकड़ों आंखों से प्रेम की जलधारा बह रही थी। और जब मैं शमशान–भूमि से चल दिया तो (पूर्वीय तपस्वी महात्मा मसीहे सच्चे चेले और भारत माता के प्रेम–पुत्र, मेरे प्रिय भाई महाशय चार्ली ऐण्ड्रूज़ के धर्मभ्राता) प्रिंसिपल 'सुशील कुमार रुद्र' मुझे आकर गले से मिले और कहा– 'मातृभूमि के निरपराध पुत्रों पर अत्याचार देख नहीं सकता। मेरा हृदय जाति के साथ है और प्रत्येक सच्चा ईसाई आपके साथ है।' परमेश्वर इस मरुभूमि में बहुत–से ऐसे रागद्वेषरूपी दुष्ट व्यसनों के दलन करने वाले रुद्र उत्पन्न करे, यह मेरी हार्दिक याचना है।

4 अप्रैल सं. 1919 ई. का दिन आया जब जुमा मस्जिद देहली में खुदा की शान दिखाई दी। उसके पश्चात् 18 अप्रैल की रात तक (ज ब तक कि पुलिस का राज फिर से स्थापित न हुआ) दिल्ली नगर में रामराज रहा। यह ठीक है कि 3 मार्च की प्रातःकाल से 18 अप्रैल की रात तक एक ताला नहीं टूटा, एक मारपीट नहीं हुई, एक जेब नहीं कतरी गई–और तो क्या, जुए खाने बन्द रहे, शराब खानों में कोई विरला आदमी ही दिखाई देता था और प्रसिद्ध गुण्डों ने भी देवियों को मां, बहिन और बेटी समझकर उनको अभयदान दे छोड़ा

था।

देहली से यह प्रेम–मयी वायु सारे पंजाब में फैल गई। एकता और मिलाप की लहर बिजली की तरह सारे देश में घूम गई। मस्जिद और मन्दिर में कुछ भेद न रहा। ऐसे समय में सच्चाई और सहनशीलता का सन्देश देने के लिए महात्मा गांधी देहली की ओर चले। जिन हुकूमत के नशे में चूर मनुष्यों का जीवन ही स्वार्थ का स्वरूप हो, उनकी समझ में न सत्य का गौरव आ सकता है और न ही वे सत्याग्रह की शान को समझ सकते हैं। स्वार्थ का इन्द्रासन डांवाडोल हो गया। इस दुबले, बीमार, मुनहनी जिस्म के अन्दरवाले आत्मा के तेज को दुनियादार स्वार्थ सहन न कर सका। जिन बहादुर ब्रिटिश जनरलों और गम्भीर नीतिमान् ब्रिटिश शासकों ने एक–तिहाई दुनिया को जीतकर जर्मन साम्राज्य की शक्ति खाक में मिला दी थी, उसके योद्धा इस नई शक्ति के उद्भव से दहल गए, और उसी का नतीजा पंजाब का घोर उपद्रव है। अराजकात का राज हो गया, मनुष्य की जान का कुछ मूल्य न रहा, जेलखाने भर दिए गए, बोलना अपराध हो गया, नंगे शरीर पर कोड़े खाकर चिल्लाना पाप हो गया, इज्जतदारों ने खयाली इज्जत को बचाने के लिए पुलिस रूपी यम दूतों के घर भर दिए और साध्वी सतियों को अपनी रक्षा कठिन हो गई। जलियांवाले बाग की घटना को सामने लाओ और जनरल डायर के कथन को याद करो :

'हां, मैं समझता हूं कि बिना गोली चलाए भी शायद मैं उनको मुन्तशिर कर सकता था।' इस पर प्रश्न हुआ कि फिर आपने ऐसा क्यों न किया ? उत्तर मिला– 'वे लौट आते और मेरी हंसी उड़ाते और मैं समझता हूं कि मैं बेवकूफ बनता।' शायद इसी मौके के लिए शायर ने कहा था–किसी की जान गई आपकी

अदा ठहरी! एक बहादुर ब्रिटिश जनरल की शान पर सैकड़ों युवा, बूढ़े और बालकों के सीस चढ़ जायं तो क्या परवाह है, उसकी शान में फर्क न आना चाहिए। उन 11 में 15 वर्ष की विधवाओं का चित्र अपने सामने लाइए जिनके पति सूली पर चढ़े या भून डाले गए और जिनके उदासीन मुखों के दर्शन मात्र ने मुझे, नेहरू जी और मालवीय जी को आठ–आठ आंसू रुलाया एक युवक के नंगे शरीर पर बेंतों की मार का हाल सुनाकर एक वृद्ध ऐसा रोया कि उसकी घिग्घी बंध गई। सिंह–पुरुष चौधरी बुग्गा की वीर रमणी का एक गोरे के हाथ से खींचकर मकान से लाया जाना केवल एक घटना है।

मैंने इन घटनाओं का स्मरण आपके हृदयों में शोक और घृणा का भाव उभारने के लिए नहीं दिलाया। घृणा किससे दिलाऊं ? क्या ब्रिटिश जाति से जिसने रिपन, ब्राइट, फासेट ब्रैडला, बेडरबर्न, इस कांग्रेस के पिता ह्यूम, काटन और उनके बीसियों सहकारियों को उत्पन्न किया और इस गिरी हुई जाति को उठाने में सहायता देते हुए ही समाप्त हुए? क्या उस जाति से जिसने हार्डिग और मॉर्ले, और माण्टेगू को जन्म दिया, जिनसे आगे भी बहुत–सी सहायता मिलने की आशा है? परन्तु स्वार्थ के सौदे को छोड़कर मैं पूछता हूं कि जिस जाति ने देवी बसन्ती और हार्नीमेन, बुड्राफ और इनके बीसियों साथियों को उत्पन्न किया और जिसने श्रद्धा–सम्पन्न सरल हृदय ऐण्ड्रूज़ को भारत माता की गोद में दे दिया–उस ब्रिटिश जाति से घृणा दिलाने के लिए मैंने आपकी स्मरणशक्ति को नहीं प्रेरित किया है और न मैं आपको व्यक्तियों से घृणा दिलाना चाहता हूं। व्यक्ति सब हमारे भाई हैं; उनमें जो दोष घुस जाते हैं वे ही हमारे शत्रु हैं।

'ओडवायर' और 'डायर', 'जॉन सन' और 'ओग्रायन' ये सब

हमारे ही तो भाई हैं। एक पिता की तो सब सन्तान हैं। उनके अन्दर जो क्रोध और असाधुता के भाव है। वे ही हमारे शत्रु है। परन्तु क्या उन शत्रुओं पर घृणा और क्रोध और 'कीने' की सहायता से हम विजय पा सकेंगे? इसका एक कवि ने ठीक उत्तर दिया है–

अक्रोधेन जयेत्क्रोधं, असाधुं साधु ना जयेत्।
जयेत्कदर्य दानेन, जयेत्सत्येन चापृतं।।

'क्रोध को हम शान्ति से जीतें, असाधुता को साधु–भाव से, कंजूसी को दान से और झूठ को सच्चाई से जीतने की आशा रखें।' जातियों की परस्पर की घृणा ने तो संसार के नाश की बुनियाद रखी है–उस घृणा का मैं समर्थक नहीं। न मैंने आपको शोकातुर करने के लिए इन घटनाओं का वर्णन किया है। मेरा मतलब केवल यह बतलाने का है कि जिस वेदना में से गुजर ने का पंजाब को सौभाग्य प्राप्त हुआ है उससे हम सबको क्या शिक्षा मिलती है।

इस वेदना का प्रथम फल हिन्दू–मुसलमानों का ईश्वरप्रदत्त मिलाप है जिसे स्थिर रखना जाति का प्रथम कर्त्तव्य है। इस मिलाप को स्थिर रखने के लिए दिलों को तीसरों के द्वेष से भी पाक रखना चााहिए। हिन्दू–मुसलमानों की एकता के स्थान में हिन्दोस्तानी मात्र के अन्दर एकता उत्पन्न करके सारे संसार को अपनाना इस समय का मुख्य कर्त्तव्य है।

दूसरा फल इस वेदना का यह है कि जाति को तप का गौरव मालूम हो गया। मार्शल–लॉ के दिनों में पता लगा कि पोलिटिकल अधिकारों का शोर मचाने वाले यदि चरित्रहीन हों तो वे देश को रसातल में ले जाते हैं। इसलिए सबसे बढ़कर काम चरित्र–संगठन का है जो जाति को अपने हाथ में लेना चाहिए।

तीसरा फल यह हुआ कि जाति को व्यवस्था–बद्ध आन्दोलन के प्रभाव का पता लग गया। जहां भी नेता बुद्धिमान्, सहनशील और सत्य–परायण थे और जनता ने उनकी आज्ञाओं का पालन किया, उन स्थानों में बड़ा भारी बचाव हुआ और शीघ्र शान्ति स्थापित हो गई। सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि सहनशक्ति का गौरव प्रत्यक्ष हो गया। सबसे बढ़कर सहनशक्ति का प्रकाश जलियांवाले बाग में हुआ। इस वृक्ष–पुष्प–फल–हीन (किन्तु अमर) वाटिका में युवा पुरुषों ने ही नहीं, बल्कि बूढ़ों और बालकों तक ने सत्य पर आरूढ़ होकर घातक गोली की वर्षा को फूलों की वर्षा समझा। इस स्थान की 'जलन' को हिन्दू–मुसलमना और सिक्ख वीर शहीदों के लहू ने मिलकर शान्त कर दिया है। यह भूमि अब 'अमर वाटिका' के नाम से प्रसिद्ध होगी क्योंकि इस पवित्र भूमि में जो मरे वे स्वयं अमर हो गए और और हम सबको और आने वाली नस्लों को अमृत–नगर में पहुंचने का सीधा रास्ता दिखा गए।

बहिनों और भाईयो! पश्चिमी परिभाषा में 'पोलिटिकलमैन' जिसे कहते हैं, वह मैं नहीं हूं। अपने पोलिटिकल अधिकार लेने का जो आधुनिक मार्ग है उसका मुझे अनुभव नहीं और इसलिए उसमें मेरा दखल देना घृष्टता मात्र होगा। कितना किस दर्जे का, किस क्रम से स्वराज्य मिलना चाहिए और किस प्रकार उसके लिए यत्न करना चाहिए, यह देश के राजनैतिक नेता ही जानते हैं, इसलिए इसका विचार मैं उन्हीं पर छोड़ता हूं और इस काम के लिए मैं मुनासिब साधन उन विविध राजनैतिक सभाओं को समझता हूं जो इस समय, कई कारणों से, स्थापित हो चुकी हैं और जिनके नेता उनको दिनों तक उन्नत करने में लगे हुए हैं। परन्तु इस जातीय महासभा के सामने मैं कुछ अपने विचार रखना

चाहता हूं जो मेरे क्रियात्मक अनुभव का निचोड़ है।

इस जातीय महासभा का प्रधान काम अब तक यह रहा है कि स्वदेश के पोलिटिकल अधिकारों को विदेशी गवर्नमेण्ट से प्राप्त करने के लिए रेज़ॉल्यूशन मात्र पास करे, परन्तु जहां एक और उन पास किए हुए प्रस्तावों (Resolutions) को अमली जामा पहनाने के लिए बहुत कम यत्न हुआ है वहां कौम की असली बुनियाद डालने और उस कौम को मिलने वाले अधिकारों को पचाने के योग्य बनाने का बहुत कम क्या, इस जातीय महासभा की तरफ से कुछ भी यत्न नहीं हुआ। स्वराज्य प्राप्त करके उसे पचाने के लिए पहली जरूरत यह है कि कौम का एक–एक बच्चा ऐसी तालीम हासिल कर सके जिससे उसकी आत्मा दृढ़ होकर उसके अपने शरीर, इन्द्रयों और मन का मालिक, उनको वश में करने वाला बन सके। यह तब हो सकेगा जब एक ओर जातीय शिक्षा–पद्धति बनाकर कौम की तालीम कौम के हाथों में हो जाय और दूसरी ओर जाति के माता और पिता अपने शरीरों, इन्द्रियों और मनों को शुद्ध करके अपनी सन्तान के सामने, पैरवी करने के लिए, उत्तम मिसाल रखें। मैंने देश की आचार तथा समाज–सम्बन्धी सेवा करते हुए गत 26 वर्षों में अनुभव किया है कि जहां प्रत्येक शिक्षित पुरुष कॉलिज से निकलते समय उपदेश और धर्म–सेवा का मानसिक व्रत धारण करके निकलता है वहां परीक्षा के समय एक हजार में से शायद ही एक साबितकदम रहता हो। ऐसे हिन्द के देशभक्त उंगलियों पर गिने जा सकते है। जो विदेशी शासकों से प्रलोभित किए जाने पर भी देश के हित के लिए उपाधि (Title) रूपी सुनहरी जंजीरों को तोड़के फेंक दें। वाइसराय की अनुचित धमकी के उत्तर में 'सर' की उपाधि को सिर से उतार के फेंक देने वाले डॉक्टर

सुब्रह्मण्यम–से ब्राह्मण देश में कितने हैं? अपनी जाति पर अत्याचार करने वाले पिशाच–भाव का जिस गवर्नमेण्ट की तरफ से इजहार हुआ, जिस गवर्नमेण्ट के चाकरों ने स्वजाति के गौरव को नष्ट करने में कुछ कसर न छोड़ी, उसकी दी हुई उपाधि को एक दिन के लिए भी धारण किए रखना पाप समझने वाले भारत के सूर्य, कवि रवीन्द्रनाथ से कितने देवता हैं? और सच्चे राजधर्म का पालन करने वाले, मनुष्य और पशु के भय से मुक्त, वैदिक निर्भता के उपदेश पर अमल करने वाले, स्वदेश को पद दलित करने वाले शासकों की श्रेणी को एकदम छोड़ देने वाले वीर शंकर नायर–से सिंह पुरुष कितने है।? देवियो और भारत माता के सुपुत्रो! यदि जाति को स्वतंत्र देखना चाहते हो तो स्वयं सदाचार की मूर्ति बनकर अपनी सन्तान के सदाचार की बुनियाद रख दो। अब सदाचारी, ब्रह्मचारी, शिक्षक हों, और कौमी हो शिक्षापद्धति (National Scheme of Education) तब ही कौम की जरूरतों को पूरा करने वाले नौजवान निकलेंगे, नहीं तो इसी तरह आपकी सन्तान विदेशी विचारों और विदेशी सभ्यता की गुलाम निकलती रहेगी।

परन्तु यह पहली जरूरत पूरी होना कठिन है जब तक कि कौम की बुनियाद न पड़ लें। मैं इण्डियन नेशनल कांग्रेस की वेदी पर खड़ा हूं और इसलिए शायद यह कहना सिडीशन समझा जाय कि 30 मार्च सन् 1919 से पहले तक कौम की बुनियाद नहीं पड़ी थी। परन्तु मैंने और जिन निर्भय देश सेवक देवताओं का मैं साथी हूं उन्होंने मशीनगनों (Machine Guns) और हवाई जहाजों (Aeroplanes) की मालिक गवर्नमेण्ट की धमकी पर भी सच को कभी नहीं दबाया तब आप दयालु बहिनों और भाइयो! आगे मुझे सत्य के प्रकाश करने में क्या सन्देह हो सकता है। मेरा

मन्तव्य है कि 34 वर्षों की मेहनत पूरा न कर सकी उसकी बुनियाद, परमेश्वर की कृपा से, देहली नगर में 30 मार्च की शाम को रखी गई और 13 अप्रैल की शाम को जब जलियांवाले बाग में हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख, बाल, युवा और वृद्धों का रक्त मिल कर बहा उस समय जातीयता के महल की बुनियादें भरी जाकर दृढ़ हो गई। अब कसर केवल एक है जिसे निकाल डालिए।

लण्डन नगर में भारत की रिफॉर्म स्कीम कमेटी के सामने 'ईसाई मुक्ति फौज' के जनरल बूथटकर (Booth-Tucker) साहब ने कहा था कि भारत के 6.5 करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार मिलने चाहिए ओर उसके लिए हेतु दिया था–"Because they are ancher-sheets of the British Government.''

इन शब्दों पर गहरा विचार कीजिए और सोचिए कि किस प्रकार आपके 6.5 करोड़ भाई–आपके जिगर के टुकड़े जिन्हें आपने काटकर परे फेंक दिया है–किस प्रकार भरत माता के 6.5 करोड़ पुत्र एक विदेशी गवर्नमेण्ट रूपी जहाज के लंगर बन सकते हैं! मैं आप सब बहिनों और भाइयों से एक याचना करूंगा। इस पवित्र जातीय मन्दिर में बैठे हुए अपने हृदयों को मातृभूमि के प्रेम–जल से शुद्ध करके प्रतिज्ञा करो कि 'आपके वे 6.5 करोड़ हमारे लिए अछूत नहीं रहे बल्कि हमारे बहिन और भाई हैं। उनकी पुत्रियां और उनके पुत्र हमारी पाठशालाओं में पढ़ेंगे, उनके गृह–नर–नारी हमारी सभाओं में सम्मिलित होंगे और हमारे स्वतन्त्रता प्राप्ति के युद्ध में वे हमारे कन्धे से कन्धा जोड़ेगे और हम सब एक–दूसरे का हाथ पकड़े हुए ही अपने जातीय उद्देश्य को पूरा करेंगे।' हे देविया और सज्जन पुरुषो! मुझे आशीर्वाद दो कि परमेश्वर की कृपा से मेरा यह संकल्प पूरा हो।

देहली नगर की जुमा मस्जिद में मैंने वह दृश्य देखा था जिसका स्वप्न मुझे 26 वर्षों से आ रहा था और क्या आश्चर्य है कि परम पिता और जगत् की दयालु माता की कृपा से मुझे अपने दूसरे स्वप्न का दृश्य भी जागृत अवस्था में देखना नसीब हो! जब वह दिन आवेगा जब आपको अपने विदेशी खानपान, अपने विदेशी पहरावे और अपने विदेशी भोग जीवन (Life of Luxury) को तिलांजली देनी होगी और कोई छुआछूत नहीं बन सकगी जो इस जातीय महासभा के सभ्यों को अपने नीचे महदूद कर सके। जाति के बिखरे हुए अंग मिलकर फिर से जातीय भवन खड़ा हो जाय और भारत सन्तान की शिक्षा जाति के ही अधिकार में हो, यह जाति की स्वतन्त्रता का मूल मन्त्र है। आओ, बहिनों और भाईयों! उस स्वर्गीय समय की एक झलक देखने के लिए परमेश्वर के पवित्र अदृश्य चरणों में अपने हृदय रूपी सीस नवा दें। कौन परमेश्वर?

'कांटा है हरिक जिगर में खटका तेरा,
हलका है हरिक गोश में खटका तेरा।
माना नहीं जिसने तुझको जाना है जरूर,
भटके हुए दिल में ही खटका तेरा।''

हे गोरे और काले के मालिक! हे राव और रंक के स्वामी! इस जातीय महासभा में अपनी सच्ची रोशनी का प्रकाश कर जिसकी सहायता से जाति के नेता सत्य का यथार्थ स्वरूप देखें और उसकी रोशनी में अपने और बेगाने के साथ एक—सा न्याय का बर्ताव कर सकें।

—श्रद्धानन्द संन्यासी

— + —

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन चरित्र, विचार चिंतन एवं कार्मों को जानने हेतु निम्न साहित्य का स्वाध्याय कीजिये

1. स्वामी श्रद्धानंद ग्रंथावली भाग—1, 2
2. मेरे पिता —लेखक इंद्र विद्यावाचस्पति
3. कल्याण मार्ग के पथिक —लेखक स्वामी श्रद्धानंद
4. स्वामी श्रद्धानंद —लेखक पं. सत्यदेव विद्यालंकार
5. धर्मोपदेश मंजरी —डॉ. विनोद चंद्र विद्यालंकार (सं)
6. श्रुति विचार सप्तक —डॉ. विष्णुदत्त राकेश (सं)
7. स्वामी श्रद्धानंद एक विलक्षण व्यक्तित्त्व—लेखक डॉ. विनोद चन्द्र विद्यालंकार
8. कुलपुत्र सुनें —डॉ. विष्णुदत्त राकेश (सं)
9. दीक्षालोक —डॉ. विष्णुदत्त राकेश (सं)
10. स्वामी श्रद्धानन्द और उनका पत्रकार कुल—डॉ. विष्णुदत्त राकेश (सं)
11. महात्मा गांधी और गुरुकुल —प्रो. स्वतंत्र कुमार (सं)
12. बन्दीघर के विचित्र अनुभव —लेखक स्वामी श्रद्धानन्द
13. स्वामी श्रद्धानंद की जीवन यात्रा —लेखक राजेन्द्र जिज्ञासु
14. Swami Shraddhananda - Jordans
15. Inside the Congress -Swami Shraddhanand
16. The History of the Assassins
17. Shraddhanand Swami - M.R.Jambunathan Dr, Vivek Arya (Ed)
18. The Arya Samaj and Its detractors - A Vindication by Munshi Ram ji Jyasu and Rama Deva

इस साहित्य के लिए सम्पर्क करें—

Vedrishi.com